

असाधारगा EXTRAORDINARY

भाग II—सण्ड 3—उप-सण्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशिक PUBLISHED BY AUTHORITY

No. 115]

नई विल्ली, सोमवार, मानं 31, 1986/चैन्न 19, 1908 NEW DELHI, MONDAY, MARCH 31, 1986/CHAITRA 10, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दो जाती है जिससे कि यह जनग संकलन के रूप में रखा जा संके Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त संजालय

(र जस्व विभाग)

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

नई दिल्ली, 31 मर्च, 1986

ग्रधिसूचना

धन-कर

का. म्र'. 149 (म्र) — केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड धन-कर स्रिविन्यम, 1957 (1957 क 27) की धारा 46 द्वारा प्रदन्त मित्रयों का अयीन करते हुए, धन-कर नियम, 1957 में कित्रयय और सभी जन करना चहता है। प्रस्ताजित सभो जनों क निय्निलिखित प्राप्त उन सभी ज्वित्यों की जनकरी के लिए प्रकृष्टित किय ज रह है जिनके उनमें प्रभावित होने की सभावन है और सूचन दी जती है कि उक्त प्रारुप नियमों पर 15 मई. 1986 को या उसके पश्चत विचार किया जएन।

उक्त तरीख के पूर्व, नियमों के उक्त प्रान्य की बंबत जो भी ग्रिक्षेप य सुप्रात्र कियों व्यक्ति से प्राप्त होगे, केन्द्रीय प्रत्यक्ष-कर बोर्ड उन पर निचर करेग। नियमों का प्रास्य

- 1 (1) इन नियमों का नाम धन-कंट (स्नतोधन) नियम 1986
- (2) ये 1 अप्रैंस, 1987 को प्रवृत्त होगे।
- 2- धन-भर नियम, 1957 में.-
- (क) नियम 1 कों, खंड (ट) के पश्चात निम्नलिखित खंड श्रंदः स्थापित किया जाइया, श्रर्थात् .-
 - "(टक) किसी कपनी के साधारण सेयर या अधिमानी श्रेयर के संबंध में "स्टाक एक्सचेज मे नियमित रूप से फोठ किय् गए शेयर" से निम्नलिखित समिप्रेत है –
 - (i) भारत में किसी मान्यताप्राप्त स्टाक एक्सचेंच मे समय समय पर नियमित रूप से कोट किया गया शेयर ; धौर
 - (ii) करवार के साधारण अनुक्रम में किए गए चासू संव्य-वह रों पर आधारित ऐसे शैयरों के क्रोटेशेन ;";
- (ख) नियम ।खख मे,-
 - (i) उप-नियम (1) के स्थान पर, निम्नलिखित उप-नियम रखा आएगा, प्रयति -

- "(i) धारा 7 की उपदारा (1) के प्रयोजनों के लिये, ऐसे गृह का भूल्य भूधार्य मुद्ध किरुए को मिन्न 12.5 से गुणा करके निकली गई रकम होगी:
 - परन्तु पट्टाधृः भूमि पर निर्मित बृह के संबंध में यह उप-नियम इस प्रकार प्रभावी होबा मन्ती भिन्न 12.5 . के स्थान पर,--
 - (क) जहां बृह पट्टाशृत भूमि पर निर्मित किया कि गया है और पट्टे की अन्तवसित अवधि पचास कि वर्ष या प्रक्षित है, भिन्न 10.0 प्रतिस्वसित की गई है; और
 - (ख) जहां गृह पट्टाधृत कृमि पर निर्मित किया गया है और पट्टे की जनविसत अविध पचास वर्ष से तम है वहां भिन्न 8.0 प्रतिस्थापित की पई है:
 - परन्तु यह और कि 31 मार्च, 1974 के पम्चल प्रजित या निमित ृत् के संबंध में, यदि इस प्रकार से निकाला गया भूल्य अर्थत की लगत या निर्भाण की लागत, तथा गृह में किए ना सुधारों की लागत, यदि कोई है, को जोक्कर, से निम्मत्य है तो अर्थन की प्रकत लागट या निर्भाण की उपन लगत को गृह का इस निमम के अधीन मृत्य मात/ जरणा। ";
 - (ii) उपनियम (2) में खंड (क) के स्थान पर, निष्निलिखित खंड रखा जाएना, प्रथील :--
- "(क) किसी गृह के संबंध में "उंधार्य सकल दिएय." से निम्न-लिखिन अभिनेत हैं -
 - (i) जहा पृत् कियाए पर है, वहां स्वामी द्वारा वार्षिक दिश्या के रूप में शास्त की गई या प्राप्य रकम, या
 - (ii) जहां गृह किराए पर नहीं है वहां स्थानीय प्राधि-कारी द्वारा सम्प्रति-कर या किसी अन्य कर के जदग्रहण के प्रयोजनों के लिए निर्धारित व्यक्तिः किराण की रक्षम जो कि उनत करों के निर्धारण का अक्षार है और ऐसे स्थानीय प्राधिकारों के न होने की दक्षा में, वह रक्षम जो स्वाभी को जिन्त रूप से प्राप्त होने की संधानना थी यदि ऐसी सम्पन्ति विराण पर ननाई जाती।

स्पटीकरण — "वर्षिक किराया" से -

- (1) उप-खंड (i) के प्रयोजनों के लिए जिम्नलिखित श्रिफित है,--
 - (क) ऐसे ममले में 77 गृह पूरे पूर्व की में किराए पर रहा है, ऐसे स्वाकि द्वारा ऐसे वर्ष की बाबत प्राप्त वास्तविक किरुषा:
 - (ख) किसी अन्य माभल में, ऐसी रकम को स्वासी द्वारा उस अविधि के लिए, जिसके लिए वह सम्पत्ति निरुए पर बी, प्राप्त किए ४५ गा थाप्त किए जाने वाले किरए की वास्तविक रकम के एमी अनुपात में होगी जो अनुपात ऐसी प्रकृति अन्य बारह मास के कीच है;
 - (ग) जहां पूर किए. जिरापवार के अधियोग से है और किसी स्थानन प्राधिकारों होते. ऐसे पृह की बादत उद्गृहीत-कर या उक्त गृह की मरम्मत पर व्यय पूर्णता। या भागतः किराएदार होता बहन किया जाता है, वाधिक

विरुषा और उसके श्रतिरिक्त किराएदार द्वारा वहन किए गए करों की रकम सा मरम्मतों का व्यय ;

- (2) उप-खंड (i) और (ii) के प्रयोजनों के लिए निम्नलिखित स्थिति है, --
 - (क) जहां स्वासी ने निक्षेप के रूप में क्रोई रकम, वाहे किराए गढ़े अधिम संदाय के रूप मे या अन्यथा, प्रहुष की है, वार्षिक किराया और उसके अतिरिक्त ऐसे निक्षेप के पन्त्रह प्रतिज्ञत की दर पर संगिक्त रकम;
 - (ख) जहां स्वामी गृह को पट्टे पर देने या गृह के पट्टे की शर्ती में उपान्तरण करने के कारण गृह से कोई फायदा या परिलब्ध प्राप्त करता है, चाहे वह धन के रूप में संप-रिवर्तनीय है या नहीं वार्षिक किराया और उसके अति-रिक्त ऐसे फायदा या परिलब्धि का मृत्य ;";
- (ग) नियम 1ध में,---
- (i) "85 प्रतिक्षत" अकों और शब्दों के स्थान पर "पिचासी प्रतिश्रत" शब्द रखें जाएंगे ;
- (ii) परन्तुक का लोप किया ज एगा।
- (घ) नियम १घ के पश्चात निम्नलिखित नियम ग्रंतः स्थापित किया जाएगा, ग्रंथातः :--

'विनिधान कंपनियों के कोट न किए गए साधारण शेयरों का बाजार मूल्य'--

'1ड. (1) विनिधान अंपनियों के क्रोट न किए गए सःधारण शेयर के बाजार मुख्य का अवधारण निम्नलिखित प्रकार से निया ज.एगा, अर्थात् :-

ऐसी कंपनी के तुलनपत्न में यथादिशित सभी दिप्यत्वों के मूल्य की उस तुलनपत्न में दिशित उसकी सभी क्रास्तियों के मूल्य में से कटौती की जाएगी। प्रत्येक साधारण शेयर का वाजार मूल्य उसका इस प्रकार निकाली गई शुद्ध रकम को कंपनी की कुल समादत्त पूंजी से विभाजित करके प्राप्त गुणन खंड से गुणा करके निकाला गए। समादत्त मूल्य होगा।

(2) उपनियम (1) के प्रयोजनों के लिए तुलनपत्न से प्रकट की गई अगस्ति का मृत्य उस विशिष्ट आस्ति को ल मृहोने वाले नियम के अनुसार अववारित उसका मृत्य माना जाएगा और यदि ऐसा कोई नियम नहीं है तो वह कीमन माना जाएगा जो उस आस्ति के लिए मिलेगा यदि उसे मृत्यांकन की तारीख को खुले बाज र में वित्रय किया जाए।

स्पष्टीकरण - इस नियम के प्रयोजनों के लिए, -

- (क) "तुलनपत्न" का वही अर्थ है जो नियम 1घ के स्पष्टीकरण 1 में हैं।
- (छ) नियम । घ के स्पष्टीकरण 2 में निर्दिष्ट रकमें आस्तियां बा दास्तिव नहीं मानी ज.एगी।

क्षत्रनी के दोट फिए गए साधारण शेयरों या अधिमानी शेयरों का बाजार नूल्य:

ाच. किया लंपनी के ऐसे सम्धारण या अधिमानी शेयर का बाजार भूल्य जो कियी मान्यता प्राप्त स्टक एवसचेज में नियमित रूप से कोट किया जाता है वह भूल्य माना जाएगा जो भूत्यांकन की तारीख को कोट किया जाता है और जहां भूल्याकन की तारीख को शेयर कोट नहीं किया गया है वहां वह भूल्य माना जाएगा जो भूल्यांकन की तारीख से ठीक एवं कोट किया है।

भागपणा का बाजार म्ल्य.

10. (1) ग्राम्पणों का बीचार मूल्य मूल्यांकन ग्रविकारी **हाए** धारा 16क के श्रवीन निर्देश किए जाने पर मृत्याकन की तारीख **को** यथा विद्यमान अनुमोदित मूल्य माना जाएगा और इस प्रकार अनुमोधित मूल्य उक्त मल्याकन की तार्रस की बाजार मूल्य उक्त मृल्याकन की तारीक को तथा ठीक आगाभी चार मृल्याकन तारीकों को, निम्नीसित समाये जनो ने कर्षान रहते हुए, बाजार मृत्य माना जाएगा, कर्यातु (-

- (क) जहां धाभूषणों में सोने या चांदी या चोनी या चांदी से मुक्त कोई मिश्राष्ट्र सम्मिलित है वहां सोने या चांदी या ऐसे सिश्वासू का बादार मूल्य वह मृत्य माना जाएशा जो सूल्यांकच की तारीख को उसका है,
- (ख) जहां कोई प्रामुक्त या आग्यूष्ण का भाग जिनव किया जाता है या भन्यथा व्ययनित किया जाता है, या कोई भागूष्ण का भ्राभूषण का भाग मूल्यांकन की तारीख को पा जतक पूर्व प्रजित किया जाता है, यहां श्राभूषण को मूल्य मूल्यांकन अधि-कारी हारा श्रनुभोदित मूल्य से कम कर दिया जाएगा या उस्वी वृद्धि कर दी काएगी।
- (2) उपनिषम (1) न किसी बात के होते हुए भी आध्यक का बाज र मूत्य वहां निर्धित दार घोषित मूल्य माना जाएगा जहां सुद्ध धन की विवरणी में घोषित आध्यणों का मूल्य पांच लाख रुपए से अधिक नहीं है और ऐसे मूल्यांकन के साथ प्ररूप खक में विनिद्धिट जानकारी दी गई है।

स्पष्टीकरण – इस नियम के प्रयोक्षनों के लिए, "ग्राध्यण" के अंतर्गत तिम्निखित ग्राते हैं:--

- (क) सोने, चांदी, प्लेटिनम या किसी ध्रन्थ कीमती द्वाह या ऐसी किमती एक या घटिक धातुओं से युक्त किसी मिधातु से बने हुए गहने, चाहे उनमें बहुमूच्य या कम मूल्य के रत्न लगे हुए हैं या नहीं, और जाहे वे किसी पहनने के परिधान में काम किए हुए या सिले हुए हैं या नहीं;
- (ख) बहुमूल्य या कम मूल्य के रत्न, चाहे वह किसी फर्नीचर, पाद या धन्य वस्तु में जड़े हुए हैं या नहीं या किसी परिधान में काम किए हुए या खिखे हुए हैं या नहीं;
- (ड०) ल्पाबंध में, प्ररूप ख के पश्चात निम्नलिखित प्ररूप क्रिक स्थापित किया जाएगा, श्रयांत्:-

''प्ररूप खक (नियम 1छ देखिए) निर्धारिकी द्वारा धारित श्रामुखणों का विवस्स

ऋम सं.	धा भूषणों का वर्णन	ग्राभूषणों की संख्या	सभी ग्राभूषणों का भार (ग्रामों मे)	कुल मूल्य [*]
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)

₹¥:-----

हिष्यवा :

- समान विवरण के आसूबणों की प्रत्येक मद को और उसके शारको पुबक पृथक रूप से सुची-बद्ध किया जाएगा।
- 2. ग्राम्यमाँ का वर्षन ऐसा होना चाहिए जिससे कि ग्राम्यमां को स्पष्ट रूप से पहचाना जा होते।

3. यदि अञ्चढताओं की अन्तर्वस्तु के लिए या किसी अन्य कारण र्ष्ट कोई सभायोजन किया जाता है ता उन्हें एक पृथक टिप्पण देकर स्पष्ट किया जाएगा।

4- वह दर जिस पर ध्राभूषण की चांदी और सोने की ध्रन्तंवस्यु का मूल्याकन किया जाता है स्पष्ट रूप से उपर्दाधात की जाती चाहिए।"

> [सं॰ 6637 - फा॰ सं॰ 134/10/86 टीपीएल] पी० के॰ ग्रपाचू, संयुक्त सचिव

क्टिपनी:-- मूल नियमों की 18-10-1957 की प्रधिसूचना सं० कान्नी विनियम एवं बादेश सं• 3384 के अंतर्गत प्रकाशित किया गया था और बाद में दिनांक 27-1-1961 के कां॰ ग्रॉ॰ सं॰ 271, 30-4-63 के 798, 28-9-64 年 1473, 4-6-68 年 2064, 2-7-68 年 2432, 10-3-70 帝 1026, 1-9-70 帝 2881, 1-9-70 帝 2582, 26-2-71 帝 999, 25-2-72 के 165, 21-6-72 के 437, 15-11-72 के 707, 17-3-73 के 154, 31-3-73 के 187, 4-6-73 के 527, 4-1-74 के 21, 8-10-74 के 599, 19-12-74 के 726, 30-12-74 के 739, 30-9-75 के 559, 1-3-76 帝 147, 31-3-76 帝 267, 3-11-76 帝 702, 15-11-76 के 732, 12-1-77 के 16, 15-2-77 के 166, 14-16-77 के 721, 7-7-78 के 434, 11-9-78 के 554, 30-3-79 के 169, 29-10-79 年 610, 10-1-80 年 41, 28-1 80 年 75, 28-2-81 के 119, 30-5-81 के 397, 19-6-1981, के 493, 22-2-83 के 130 (म) आर 31-3-83 के 273 (म) 12-3-84 के 158 (म) 1-10-84 年 758 (明), 21-12-84 年 951(明), 26-12-84 年 958(ब्र), 19-9-85 के 685(ब्र) हारा संशोधन किया गया।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

New Delhi, the 31st March, 1986

NOTIFICATION

WEALTH TAX

S.O. 149(E).—The following draft of certain rules further to amend the Wealth-tax Rules, 1957, which the Central Board of Direct Taxes proposes to make in exercise of the powers conferred by section 46 of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957), is hereby published for the information of all persons likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft rules will be taken into consideration on or after the 15th May, 1986.

Any objection or suggestion which may be received from any person with reference to the said draft rules before the said date will be considered by the Central Board of Direct Taxes.

DRAFT RULES

- 1. (1) These rules may be called the Wealth-tank (Amendment) Rules, 1986.
- (2) They shall come into force on the 1st day of April, 1987.

2. In the Wealth-tax Rules, 1957,-

- (a) in rule 1A, after clause (k), the following clause shall be inserted, namely:—
 - '(ma) "share regularly quoted on the stock exchange", in relation to an equity share or a preference share, means—
 - (i) a share quoted on any recognised stock exchange with regularity from time to time; and
 - (ii) the quotations of such shares are based on current transactions made in the ordinary course of business;';
- (b) in rule 1BB,-
- (i) for sub-rule (1), the following sub-rule shall be substituted, namely:
 - "(1) For the purposes of sub-section (1) of section 7, the value of a house shall be the amount arrived at by multiplying the net maintainable rent by the figure 12.5:

Provided that in relation to a house which is built on leasehold land, this sub-rule shall have effect as if for the figure 12.5,—

- (a) where the house is constructed on leasehold land and the unexpired period of lease is fifty years or more, the figure 10.00 had been substituted; and
- (b) where the house is constructed on leasehold land and the unexpired period of lease is less than fifty years, the figure 8.0 had been substituted:

Provided further that in respect of a house acquired or constructed after the 31st March, 1974, if the value so arrived at is lower than the cost of acquisition or the cost of construction as increased by the cost of improvement in the house, if any, the said cost of acquisition or the said cost of construction shall be taken as the value of the house under this rule.";

- (ii) in sub-rule (2), for clause (a), the following clause shall substituted, namely:—
 - '(a) "gross maintenable rent", in relation to a house, means—
 - (i) where the house is let, the amount received or receivable by the owner as annual rent, or
 - (ii) where the house is not let, the amount of annual rent assessed by any local

authority for the purposes of levy of property tax or any other tax on the basis of such assessment and in absence of such a local authority, the amount which the owner is reasonably expected to receive had such property been let.

Explanations.—"annual rent"—

- (1) for the purposes of sub-clause (i), means,—
 - (a) in a case where the house is let throughout the previous year, the actual rent received by the owner in respect of such year;
 - (b) in any other case, the amount bears the same proportion to the amount of the actual rent received by the owner for the period for which the property is let as the period of twelve months bears to such period;
 - (c) where the house is in the occupation of a tenant and the taxes levied by any local authority or expenditure on repairs in respect of the house is borne wholly or partly by the tenant, the annual rent as increased by the amount of the taxes or, as the case may be, the expenditure or repairs so borne by the tenant;
- (2) for the purposes of sub-clauses (i) and (ii),
 - (a) where the owner has accepted any amount as deposit, whether by way of advance payment towards rent or otherwise, the annual sont as increased by the amount calculated at the rate of fifteen per cent of such deposit;
 - (b) where the owner derives any benefit or perquisite from the house by way of leasing of the house or the modifications of the terms of its lease, whether convertible into money or not, the annual rent as increased by the value of such benefit or prequisite;';
 - (c) in rule 10,—
 - (i) for the figures and words "85 per cent", the words "eighty per cent" shall be substituted;
 - (fi) the proviso shall be omitted;
 - (d) after rule 10, the following rules shall be inserted, namely:—
 - 'Market value of unquoted equity shares of investment companies.
 - 1E. (1) The market value of an unquoted equity share of an investment company shall be determined as follows:—
 - The value of all the liabilities as shown in the balance sheet of such company shall

be deducted from the value of all its assets shown in that balance sheet. The market value of each equity share shall be its paid up value multiplied by the factor arrived at by dividing the net amount so arrived at by the total paid up capital of the company.

(2) For the purpose of sub-rule (1), the value of an asset disclosed in the balance sheet shall be taken to be its value determind in accordance with the rule as applicable to that particular asset and in the absence of such a rule the price which the asset will fetch if sold in the open market on the valuation date.

Explanation.—for the purposes of this rule,—

- (a) the expression "balance sheet" has the same meaning as in Explanation I to rule 10;
- (b) the amounts referred to in Explanation II to rule 1D shall not be treated as assets or liabilities.

Market value of quoted equity shares or preference shares of companies

1F. The market value of an equity or a preference share of any company which is regularly quoted at any recognised stock exchange shall be taken as the value quoted on the valuation date and where the share has not been quoted on the valuation date, the value quoted immediately preceding the valuation date.

Market value of jewellery.

- 1G. (1) The market value of jewellery snall be taken to be the value estimated by the Valuation Officer on reference under section 16A as on a valuation date and the value so estimated shall be taken to be the market value on the said valuation date and the next following four valuation dates, subject to the following adjustments, namely:—
 - (a) where the jewellery includes gold or silver any alloy containing gold or silver, the market value of gold or silver or such alloy, as the case may be, shall be taken to be the value on the valuation date;
 - (b) where any jewellery or part of jewellery is sold or otherwise disposed of, or any jewellery or part of jewellery is acquired on or before the valuation date, the value of jewellery shall be reduced or increased, as the case may be, from the value estimated by the Valuation Officer.
- (2) Notwithstanding anything contained in subrule (1), the market value of jewellery shall be taken 1793 GI/85-2

to be the value declared by the assessee where the value of jewellery so declared in the return of net wealth does not exceed rupees five lakhs and such valuation is accompanied with information specified in Form BA.

Explanation.—For the purposes of this rule, "jewellery" includes—

- (a) ornaments made of gold, silver, platinum or any other precious metal or any alloy containing one or more of such precious metals, whether or not containing any precious or semi-precious stone, and whether or not worked or swen into any wearing apparel;
- (b) precious or semi-precious stones, whether or not met in any furniture, utensil or other article of worked or sewn into any apparel';
- (e) in the Appendix, after Form B, the following Form shall be inserted, namely:—

"FORM BA

(See rule 1G)

Statement of jewellery held by the assessee

SI. No.	Description of jewellery	Number of pieces	Weight for all pieces (grammes)	Total value	
1	?	3	4	5	

Total	:	Rs.

Notes:

- Each item of jewellery having identical description and weight should be listed separately.
- The description of jewellery should be such as to enable the jewellery to be clearly identified.
- 3. If any adjustment is made for the content of impurities or for any other reason, the same should be clearly explained by giving a separate note.
- The rate at which silver and gold content of jewellery is valued should be clearly indicated.".

[No. 6637|F. No. 134|10,86-TPL] P. K. APPACHOO, Jt. Secy. (TPL) Note:—Principal rules were published under Notification No. S.R.O. 3384 dated 18-10-1957 and subsequently amended by S.O. No. 271 dated 27-1-1961, 798 dated 30-4-1963, 1473 dated 28-9-1964, 2064 dated 4-6-1968, 2432 dated 2-7-1968, 1026 dated 10-3-1970, 288 dated 1-9-1970, 2882 dated 1-9-70, 999 dated 26-2-1971, 165 dated 25-2-1972, 437 dated 21-6-1972, 707 dated 15-11-1972, 154 dated 17-3-1973, 187 dated 31-3-1973, 327 dated 4-6-1973, 21 dated 4-1-1974, 599 dated 8-10-1974, 726 dated 19-12-1974, 739 dated 30-12-1974, 559 dated 30-9-1975, 147 dated 1-3-1976, 267 dated 31-3-1976,

702 dated 3-11-1976, 732 dated 5-11-1976, dated 12-1-1977, 166 dated 15-2-1977, 721 dated 14-10-1977, 434 dated 7-7-1978, 554 dated 14-10-1977, 434 dated 11-9-1978, 169 29-10-1979, 41 30-3-1979, dated 610 dated 41 dated 19-1-1980. 75 dated 28-1-1980, 119 dated 29-2-1981 397 dated 30-5-1981, 493 dated 19-6-1981, 130(E) dated 22-2-1983 and 273(E) dated 31-3-1983, 158(E) dated 12-3-1984, 758(E) dated 1-10-1984, 951(E) dated 21-12-1984, 958(E) dated 26-12-1984, 658(E) dated 19-9-1985.